संत श्री आशारामजी आश्रम द्वारा प्रकाशित

ऋषि प्रसाद

मूल्य : ₹ ७ **भाषा : हिन्दी**
प्रकाशन दिनांक : १ जुलाई २०२५
वर्ष : ३५ अंक : १ (निरंतर अंक : ३९१)
पृष्ठ संख्या : ३६ (आवरण पृष्ठ सहित)

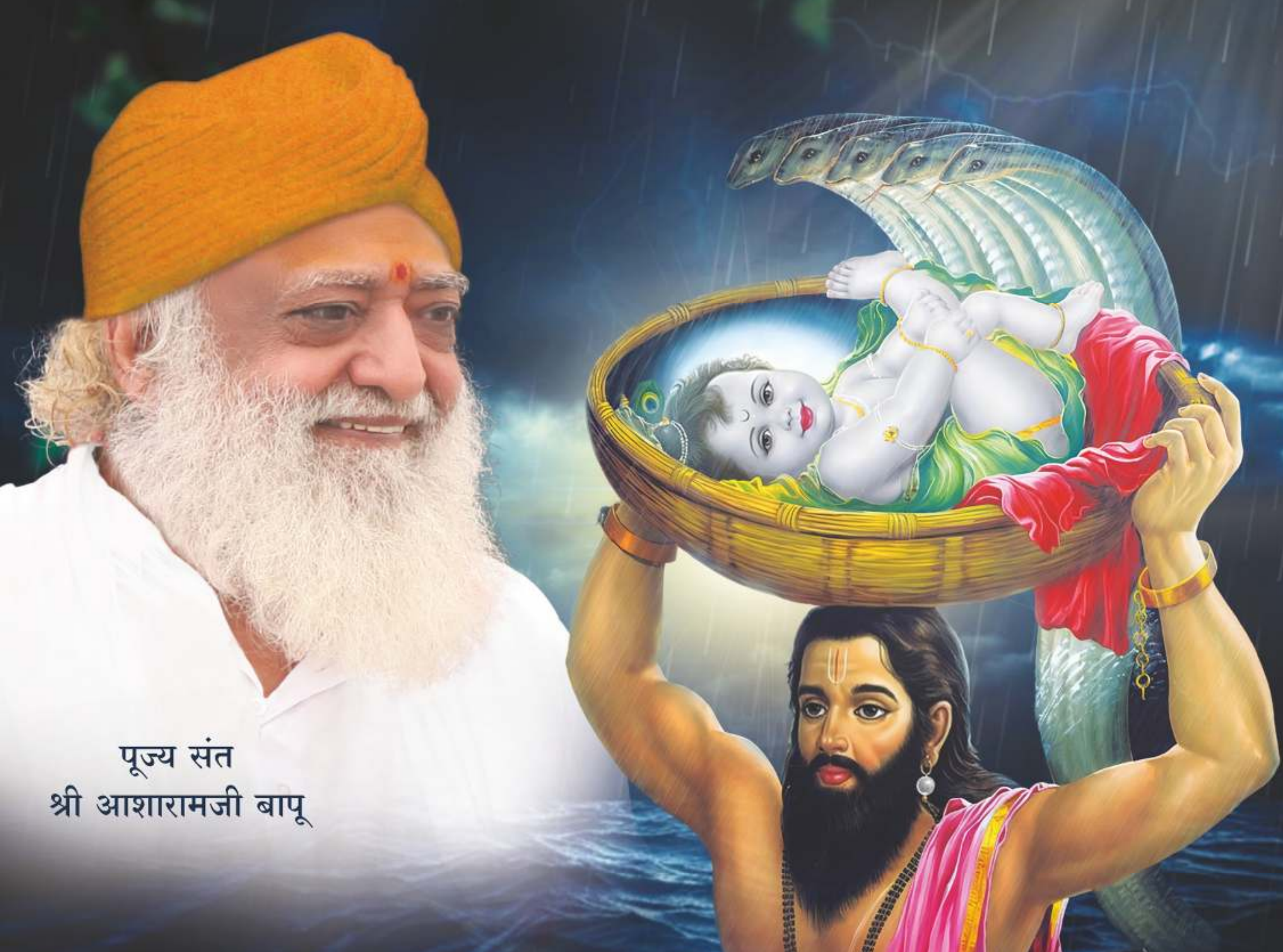

पूज्य संत
श्री आशारामजी बापू

दुःख-परेशानियों के अम्बार के बीच मुस्कराते हुए अवतरित होकर श्रीकृष्ण दुनिया को दिखा रहे हैं कि चारों तरफ दुःख-परेशानियाँ होते हुए भी तुम ऐसे ज्ञानस्वरूप चैतन्य आत्मा हो जिस पर इनका असर नहीं हो सकता। - पूज्य बापूजी

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी

१५ व १६ अगस्त ११

खेल-मैदान के लिए इस भूमि का बलिदान करके हम विकास को बढ़ावा दे रहे हैं या भारत को पीछे की ओर धकेल रहे हैं ?

- श्री आशुतोष झा, अधिवक्ता, कोलकाता उच्च अदालत २०

वे स्वयं तो तरते हैं, दूसरों को भी तार लेते हैं

- पूज्य बापूजी

जिन देशों में इन्द्रिय-विकारों को भड़कानेवाले साधन, भोग-सामग्री और सुविधाएँ ज्यादा हैं वे बेचारे आध्यात्मिक शांति में, आत्मधन की दुनिया में गरीब हैं और जिस देश के पास कम सुख-सुविधाएँ, कम इन्द्रियों के भोग हैं वह आध्यात्मिक जगत में अमीर है। भारत देश आध्यात्मिक जगत में अमीर है और अमेरिका आदि देश गरीब हैं।

इन्द्रियों को जितने विषय-विलास और सुविधाएँ मिलती हैं, उतनी वे बलवान होती हैं और जीव को दुर्बल बना देती हैं। भोगी-विलासी लोग थोड़ी-थोड़ी बात में जल्दी आत्महत्या कर लेंगे क्योंकि वे दुर्बल जीव हैं। थोड़ी-थोड़ी बात में अशांत हो जायेंगे और थोड़ी-थोड़ी चीज के प्रति आकर्षित हो जायेंगे।

अगर खाने में संयम नहीं रहा तो पेट का रोग होना अनिवार्य है। देखने में संयम नहीं रहा तो जीवनीशक्ति क्षीण होनी अनिवार्य है। बोलने में संयम नहीं रहा तो व्यर्थ में शक्ति का नाश होना अनिवार्य है। ऐसे ही पति-पत्नी के संबंध (यौन संबंध) में भी संयम नहीं रहा तो अकाल मृत्यु भी अनिवार्य है। भगवान बोलते हैं :

...सन्नियम्येन्द्रियग्रामं सर्वत्र समबुद्धयः ।
ते प्राप्नुवन्ति मामेव सर्वभूतहिते रताः ॥

'जो लोग इन्द्रियों के समूह को रोककर, सर्वत्र समान बुद्धि रख के और समस्त प्राणियों के हित में तत्पर हो के अविनाशी, अकथनीयस्वरूप, अव्यक्त, सर्वगत (सर्वव्यापी), अचिन्त्य, अज्ञान और उसके कार्य के अधिष्ठानभूत, निर्विकार और नित्य निर्गुण ब्रह्म की उपासना करते हैं, वे भी मुझे ही प्राप्त कर लेते हैं।' **(गीता : १२.३-४)**

इन्द्रिय-समुदाय को सम्यक् प्रकार से नियम में रखना चाहिए। शादी कर ली उसका मतलब यह नहीं कि विकारी सुख में अपने को निचोड़ डालें। भोजन कर रहे हैं उसका मतलब यह नहीं कि स्वाद के गुलाम बनकर अपनी पाचनशक्ति को बिगाड़ दें। आँखें मिली हैं उसका मतलब यह नहीं कि व्यर्थ का देख-देखकर, बार-बार विकारी दृष्टि से किसी दृश्य को देख के अपने को खपा दें। कान मिले हैं उसका मतलब यह नहीं कि व्यर्थ का सुन-सुनकर अंदर विकार भड़काने लग जायें। कान तो इसलिए मिले हैं कि सद्गुरु के श्रीमुख से अपने स्वरूप का ज्ञान श्रवण कर भीतर गोता मार के मुक्त हो जायें।

ऐसे हर इन्द्रिय को संयत करके जो समबुद्धि होने लगता है - अनुकूलता में भी सम और प्रतिकूलता में भी सम, मान में भी सम और अपमान में भी सम, गर्मी में भी सम और सर्दी में भी सम... ऐसे सम रहनेवाले पुरुष भूतमात्र के हितैषी होते हैं। और ऐसे हितैषी पुरुष अपने को तो तार लेते हैं, अपने सम्पर्क में आनेवालों को भी तार लेते हैं।

स तरति लोकांस्तारयति ।

ऋषि प्रसाद

हिन्दी, गुजराती, मराठी, ओड़िया, तेलुगु, कन्नड़, अंग्रेजी व बंगाली भाषाओं में प्रकाशित

वर्ष : ३५ अंक : १ (निरंतर अंक : ३९१)
प्रकाशन दिनांक : १ जुलाई २०२५
मूल्य : ₹ ७ आवधिकता : मासिक
पृष्ठ संख्या : ३६ (आवरण पृष्ठ सहित)
भाषा : हिन्दी | आषाढ़-श्रावण, वि.सं. २०८२

स्वामी : संत श्री आशारामजी आश्रम
प्रकाशक : धर्मेश जगराम सिंह चौहान
मुद्रक : विवेक सिंह चौहान
प्रकाशन स्थल : संत श्री आशारामजी आश्रम, मोटेरा, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुजरात)
मुद्रण स्थल : हरि ॐ मैन्युफेक्चरर्स, कुंजा मतरालियों, पौंटा साहिब, सिरमौर (हि.प्र.)-१७३०२५
सम्पादक : श्रीनिवास र. कुलकर्णी
सहसम्पादक : डॉ. प्रे.खो. मकवाणा
संरक्षक : श्री सुरेन्द्रनाथ भार्गव
पूर्व मुख्य न्यायाधीश, सिक्किम; पूर्व न्यायाधीश, राज. उच्च न्यायालय; पूर्व अध्यक्ष, मानवाधिकार आयोग, असम व मणिपुर

कृपया अपना सदस्यता शुल्क या अन्य किसी भी प्रकार की नकद राशि रजिस्टर्ड या साधारण डाक द्वारा न भेजें। इस माध्यम से कोई भी राशि गुम होने पर हमारी जिम्मेदारी नहीं रहेगी। **अपनी राशि मनीऑर्डर या डिमांड ड्राफ्ट ['हरि ओम मैन्युफेक्चरर्स' (Hari Om Manufactureres) के नाम अहमदाबाद में देय] द्वारा ही भेजने की कृपा करें।**

सम्पर्क पता : 'ऋषि प्रसाद', संत श्री आशारामजी आश्रम, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुज.)
फोन : (०७९) २७५०५०१०-११, ६१२१०८८८
केवल 'ऋषि प्रसाद' पूछताछ हेतु : (०७९) ६१२१०७४२
९५१२०८१०८१ 'Rishi Prasad'
ashramindia@ashram.org
www.ashram.org www.rishiprasad.org
www.asharamjibapu.org

सदस्यता शुल्क (डाक खर्च सहित) भारत में

अवधि	शुल्क
वार्षिक	₹ ७५
द्विवार्षिक	₹ १४०
पंचवार्षिक	₹ ३४०
आजीवन (१२ वर्ष)	₹ ७५०

विदेशों में

अवधि	सार्क देश	अन्य देश
वार्षिक	₹ ६००	US $ 20
द्विवार्षिक	₹ १२००	US $ 40
पंचवार्षिक	₹ ३०००	US $ 80
आजीवन (१२ वर्ष)	₹ ६०००	US $ 200

Subject to Ahmedabad Jurisdiction.

इस अंक में...

❖ **स्वतंत्रता दिवस पर विशेष** ✲ सच्ची आजादी और काल्पनिक आजादी ४
❖ **आगामी पुण्यदायी तिथियाँ व योग** ५
❖ **समसामयिक** ✲ सांस्कृतिक और धार्मिक स्थलों को तोड़ना मानवाधिकारों का उल्लंघन : संयुक्त राष्ट्र ६
❖ **क्या है उस साबरमती की महिमा जिसके तट पर आश्रम है ?** ८
❖ **आगामी पर्व-त्यौहार** ✲ प्रेम, त्याग और सदाचार का संदेश देनेवाला पर्व १०
❖ **पर्व विशेष** ✲ विघ्न-बाधाओं में भी आनंदित रहने की कला सिखानेवाला श्रीकृष्णावतार ११
❖ **जन्माष्टमी का नया उपहार** ✲ शाम्भवी मुद्रा १३
❖ **पूज्य बापूजी के जीवन-प्रसंग** ✲ कैसे प्रेरक, फलदाता व हितैषी हैं मेरे गुरुदेव ! १४
❖ **सांस्कृतिक समाचार** ✲ सांस्कृतिक धरोहरों का संरक्षण करना सरकारों का कर्तव्य है : यूनेस्को १६
❖ **विद्यार्थी संस्कार** ✲ विवेक और संवेदना से पूर्ण चन्द्रशेखर आजाद का जीवन १८
✲ जुल्म करने से दुगना पाप है जुल्म सहना ✲ ज्ञानवर्धक पहेलियाँ १९
❖ **आप कहते हैं** ✲ यह भारत के संवैधानिक इतिहास में काला धब्बा होगा - श्री आशुतोष झा, अधिवक्ता, कोलकाता उच्च अदालत २०
❖ **महिला उत्थान** ✲ आदर्श माता का अनूठा उदाहरण : माता विद्यावती २१
❖ **तत्त्व दर्शन** ✲ जाग्रत-पुरुष व जाग्रत अवस्था के अभिमानी में भेद करो २२
❖ **अंतर्राष्ट्रीय समाचार** ✲ हिन्दू धर्म एक वैश्विक धर्म के रूप में प्रतिष्ठित रहा है २३
❖ **इतिहास के पन्नों से...** ✲ उन वीर पुरुष की गाथा, जिन्होंने फल नहीं चाहा, केवल कर्तव्य निभाया २४
❖ **संस्कृति विज्ञान** ✲ भारतीय संस्कृति के आधारभूत तथ्य २५
❖ **संतों की हितभरी अनुभव-वाणी** २६
❖ **संस्कृत दिवस पर विशेष**
✲ शांति, माधुर्य व अंतर्मुखता देनेवाली भाषा : संस्कृत २७
❖ **ताजा खबर** ✲ फिल्म के गाने से हटाना पड़ा भगवान वेंकटेश्वर के भजनवाला भाग - सचिन शेरे २८
❖ **स्वास्थ्य समाचार** ✲ स्वस्थ एवं निरोगी जीवन के लिए वरदान : पुनर्नवा ३०
❖ **जीवन जीने की कला** ✲ स्थलबस्ति ३१
❖ **भक्तों के अनुभव** ✲ 'बच्चू ! बाबा से दीक्षा ले ले फिर तू पी के दिखाना !' - जगन्नाथ शर्मा, सेवानिवृत्त सेना आयुध अधिकारी ३३
❖ **जनहित समाचार** ✲ पहलगाम में मारे गये निर्दोषों की सद्गति हेतु... ३४
❖ **अनमोल कुंजियाँ** ✲ कालसर्पयोग, मृत्युयोग से छुटकारा पाने हेतु ३४
✲ भूत-प्रेत व बुरी नजर से मुक्ति का अचूक उपाय ३४
✲ लक्ष्मीप्राप्ति का आसान प्रयोग ३४

विभिन्न चैनलों पर पूज्य बापूजी का सत्संग

अनादि TV
रोज सुबह ६:३० व रात्रि ११ बजे टाटा प्ले (चैनल नं. ११६१), एयरटेल (चैनल नं. ३७९) व म.प्र., छ.ग., उ.खं. के विभिन्न केबल

DIGIANA DIVYA JYOTI
रोज रात्रि १० बजे म.प्र. में 'डिजियाना' केबल (चैनल नं. १०९)

सेवाकार्य भी
Asharamji Bapu
Asharamji Ashram
Mangalmay Digital
यूट्यूब चैनल्स

डाउनलोड करें : Rishi Prasad App (ऋषि प्रसाद की ऑनलाइन सदस्यता हेतु), Rishi Darshan App (ऋषि दर्शन विडियो मैगजीन की सदस्यता हेतु) एवं Mangalmay Digital App

सच्ची आजादी और काल्पनिक आजादी

१५ अगस्त : स्वतंत्रता दिवस पर विशेष

१५ अगस्त को देशभर में ७९वाँ स्वतंत्रता दिवस मनाया जायेगा । यह दिन केवल जश्न का नहीं बल्कि जागरण का भी है । एक ऐसा जागरण जो हमें यह सोचने के लिए प्रेरित करे कि 'हमने बाह्य स्वतंत्रता तो पायी किंतु क्या हम उस आंतरिक स्वतंत्रता की ओर भी बढ़ रहे हैं जिसे हमारे शास्त्रों और महापुरुषों ने जीवन का चरम लक्ष्य बताया है ?' सच्ची आजादी क्या है इसके बारे में पूज्य बापूजी के सत्संग में आता है :

जब इन्द्रियों, मन और विषय-विकारों के बंधन से परे अपना परमेश्वरीय सुख मिले तब सच्ची आजादी है, बाकी काल्पनिक आजादियाँ अपने-अपने राज्यों की, देशों की, मजहब की कई बार धरती पर आयीं। पति-पत्नी का झगड़ा चल रहा था, तलाक हो गया - 'चलो आजाद हो गये !' कैदी जेल से आजाद हो गया। ऐसे ही देश गुलाम था, अब आजाद हो गया - 'चलो आजादी दिवस मनाओ !' ये सब सापेक्ष काल्पनिक आजादियाँ हैं । जीवात्मा को सच्ची आजादी तब मिलती है जब वह विषय-विकारों के प्रभाव से अपने को विनिर्मुक्त करके भगवद्-रस से सम्पन्न हो जाय ।

दिल-ए-तस्वीर है यार !
जब भी गर्दन झुका ली, मुलाकात कर ली ।

वह सच्चा आजाद है । वह आजाद-आत्मा किसी भी देश, काल, वस्तु, परिस्थिति से प्रभावित नहीं होता । वह किसी भी बंधन में और कर्मों में कर्तृत्व के जाल में नहीं फँसता । पूर्ण आजाद तो ब्रह्मवेत्ता होते हैं, बाकी सब कल्पना की आजादियाँ मनाते रहो काल्पनिक जगत में ।

डायोजिनीस नाम के एक संत थे, बड़े आजाद थे लेकिन उस जमाने में थे जब लोग खरीदे जाते थे, गुलाम हो जाते थे । डायोजिनीस संत को बेचने के लिए बदमाशों ने घेरा डाला । हाथ में रस्से-वस्से थे । डायोजिनीस बोले : ''क्या करते हो ?''

बदमाश बोले : ''तुमको बाँध के बेचने ले जायेंगे ।''

''जब मैं डरूँ, भागूँ तब तुम रस्से डालो । काहे को बेवकूफ हो रहे हो ? कहाँ चलना है ? मैं चलता हूँ ।''

''भागोगे नहीं ?''

''क्यों भागूँगा ?''

डायोजिनीस उनके साथ चले । चले-चले... ले जा के जहाँ मनुष्य बिकते थे वहाँ चबूतरे पर खड़ा कर दिया उनको । बदमाश बोले : ''है कोई गुलाम को खरीदनेवाला ? लगाओ बोली !''

डायोजिनीस ने कहा : ''गलत आवाज मारते हो। बोलो, है कोई गुलाम स्वामी को खरीदनेवाला ?''

लोगों ने बोला : ''तुम स्वामी काहे के ? तुमको तो ये बेचने लाये हैं ।''

''इनसे पूछ के देखो, ये मेरे पीछे-पीछे आये

क्या है उस साबरमती की महिमा जिसके तट पर आश्रम है ?

संत श्री आशारामजी आश्रम, अहमदाबाद, जहाँ से नित्य ज्ञान, भक्ति और सेवा की गंगा प्रवाहित होती है वह जिस पावन सरिता साबरमती के तट पर बसा है उसकी शास्त्रों में गजब की महिमा बतायी गयी है । उसमें भी साबरमती का उत्तर तट और जहाँ इसका जल पूर्व से पश्चिम की ओर बहता हो उस स्थान की महिमा तो और भी विशेष है । आश्रम जहाँ स्थित है वहाँ ये दोनों बातें लागू होती हैं । इस दृष्टि से भी आध्यात्मिक लाभ के लिए यहाँ की भूमि की विशिष्टता है । जानते हैं इसकी महिमा :

पद्म पुराण के उत्तरखंड में भगवान शिवजी कहते हैं : ''पार्वती ! अब मैं साभ्रमती नदी के माहात्म्य का यथावत् वर्णन करता हूँ । मुनिश्रेष्ठ कश्यपजी ने इसके लिए बहुत बड़ी तपस्या की थी । एक दिन महर्षि कश्यपजी नैमिषारण्य गये । वहाँ ऋषियों ने कहा : ''कश्यपजी ! आप हम लोगों की प्रसन्नता के लिए यहाँ गंगाजी को ले आइये । प्रभु ! वह सरिताओं में श्रेष्ठ गंगा आपके ही नाम से प्रसिद्ध होगी ।''

पार्वती ! कश्यपजी ने उन महर्षियों की बात सुन के जंगल में जाकर दुष्कर तपस्या की । उनकी तपस्या से प्रसन्न होकर मैंने अपने मस्तक से एक जटा उखाड़कर उसीके साथ उन्हें गंगा को दिया । गंगाजी को लेकर कश्यपजी बड़ी प्रसन्नता के साथ अपने स्थान को चले गये । पूर्वकाल में राजा भगीरथ को मैंने गंगा समर्पित की थी । तत्पश्चात् पुनः कश्यपजी को गंगा प्रदान की । वह गंगा सतयुग, द्वापर, त्रेता और कलियुग में भिन्न-भिन्न नामों से सुविख्यात हुई । सतयुग में कृतवती, त्रेता में गिरिकर्णिका, द्वापर में चंदना और कलियुग में उसी गंगा का नाम साभ्रमती (साबरमती) पड़ा । यह काश्यपी गंगा समस्त रोग और दोषों का अपहरण करनेवाली है । देवी ! यह नदी सबसे श्रेष्ठ और सम्पूर्ण जगत में पावन है ।

देवी ! इतना ही नहीं, यह पवित्र और पापनाशिनी होने के कारण परम धन्य है । देवेश्वरी ! पितृ तीर्थ, सब तीर्थों सहित प्रयाग, माधवसहित भगवान वटेश्वर, दशाश्वमेध तीर्थ तथा गंगाद्वार - ये सब मेरी आज्ञा से साभ्रमती नदी में निवास करते हैं । नंदा, ललिता, सप्तधारक, मित्रपद, केदारतीर्थ, सर्वतीर्थमय गंगासागर, सतलज के जल से भरे हुए कुंड में ब्रह्मसर तीर्थ तथा नैमिषतीर्थ भी मेरी आज्ञा से सदा साभ्रमती नदी के जल में निवास करते हैं ।

श्वेता बल्कलिनी, हिरण्यमयी, हस्तिमती तथा सागरगामिनी नदी - ये सब पितरों को अत्यंत प्रिय तथा श्राद्ध का कोटि गुना फल देनेवाली हैं । वहाँ पुत्रों को पितरों के हित के लिए पिंडदान करना चाहिए । जो मनुष्य वहाँ स्नान और दान करते हैं वे इस लोक में सुख भोगकर अंत में भगवान विष्णु के सनातन धाम को जाते हैं । ये सभी नदियाँ अव्यक्तरूप से साभ्रमती नदी में बहती रहती हैं ।''

पूज्य बापूजी के सत्संग में आता है : ''योगियों के संकल्प में बल होता है, धूल की चुटकी भी जिस किसी निमित्त दे देते हैं वह काम हो जाता है । योगेश्वर भगवान शिवजी जटा का बाल दे दें अथवा मिट्टी की चुटकी भी दे दें तो उनके संकल्प में बल होता है, फले बिना कैसे रहेगा ? निमित्त

विघ्न-बाधाओं में भी आनंदित रहने की कला सिखानेवाला श्रीकृष्णावतार

पर्व विशेष

१५ व १६ अगस्त को श्रीकृष्ण जन्माष्टमी है। यह पर्व सभी संत श्री आशारामजी आश्रमों में बड़े धूमधाम से मनाया जाता है। भगवान श्रीकृष्ण के प्राकट्य और इस दिन का उपवास करने के लाभ व न करने से होनेवालीं हानियों के बारे में पूज्य बापूजी के सत्संग में आता है :

निर्गुण ब्रह्म हुए सगुण साकार

मौत में भी अमरता का दर्शन करानेवाला श्रीकृष्ण-दर्शन, श्रीकृष्ण-प्राकट्य है, जो सदा मुस्कराता हुआ है। जीते-जी मुक्ति के आनंद का, जीते-जी सब व्यवहार करते-कराते निर्लेप नारायण के सुख का अनुभव कराने के लिए वह परात्पर, अज्ञात, अव्यक्त ब्रह्म, जो वाणी का विषय नहीं, वह वाणी का विषय बन के; जो आँखों का विषय नहीं, वह आँखों का विषय बनकर; जो दृश्य नहीं, वह दृश्य बन के प्रकट हुआ है। कुछ लोग सोचते हैं कि 'जो अज्ञात ब्रह्म है, निर्गुण-निराकार है, अणु-अणु में व्याप्त है वह भगवान ऐसा नन्हा-मुन्ना कैसे हो जायेगा ?'

१५ व १६ अगस्त : श्रीकृष्ण जन्माष्टमी

तो भाई ! आत्मा भी निर्गुण-निराकार है तो यह जगत, मनुष्य और पशु-पक्षी कैसे बन गये ? जब निर्गुण-निराकार की सत्ता से सगुण-साकार पशु-पक्षी बन सकते हैं तो निर्गुण-निराकार यशोदा या देवकी का नन्हा क्यों नहीं बन सकता ? नन्हों को उठाना है तो नन्हा बन के ही उठाया जाता है इतना तो माता-पिता भी जानते हैं।

इन्द्र कहता है कि 'हम ही सर्वोपरि हैं, हमारी ही पूजा होनी चाहिए, हमारा ही सिद्धांत चले।' 'इन्द्र' माने सत्ता का प्रतीक। ऐसे इन्द्र का जहाँ बोलबाला था वहाँ जाकर गोवर्धन की पूजा शुरू करा दी। ऐश्वर्य और सत्ता की गुलामी नहीं परंतु जो परिश्रम करके प्रेम से जीते हैं उनकी श्रीकृष्ण ने जय-जयकार करा दी। जो सज्जन, अच्छे लोग हैं वे ऐश्वर्य या सत्ता के आगे सिकुड़ जाते हैं। यह सिकुड़न मिटाने का भी श्रीकृष्ण का बड़ा दैवी कार्य रहा। सिकुड़ना क्यों ? डर किस बात का ?

श्रीकृष्ण के जीवन में एक तरफ जितनी विघ्न-बाधाएँ भरपूर हैं, दूसरी तरफ उतना ही आनंद, शांति और माधुर्य भी भरपूर है। जन्मते ही माँ-बाप छोड़ने पड़े और पराये घर जाना पड़ा। पराये घर में भी यशोदाजी सोयी हैं और वसुदेवजी उनको वहाँ रख आये हैं। वहाँ श्रीकृष्ण रोने लगते हैं कि 'मैं गोकुल में आया हूँ और गोकुलवासी सो रहे हैं ! 'गो' माने इन्द्रियाँ, जो इन्द्रियों से दिखने लग जाय ऐसा निर्गुण-निराकार साकार होकर आया हूँ और यहाँ मैया सो रही है !' तो रोने से भी अगर कोई जगता है और रोने से भी कोई आनंद को देख लेता है तो श्रीकृष्ण बोलते हैं 'मुझे रोने में भी कोई समस्या नहीं है। मक्खन चुराने से भी कइयों का दिल चुराया जा सकता है और दिल में दिलबर भरा जा सकता है तो मुझे

विद्यार्थी संस्कार

विवेक और संवेदना से पूर्ण चन्द्रशेखर आजाद का जीवन

(पूज्य बापूजी के सत्संग से)

२३ जुलाई : चन्द्रशेखर आजाद जयंती पर विशेष

भावुकता के साथ विचार आवश्यक

एक कार्यकर्ता था । वह बोला : ''देश के लिए तो कुर्बान हो जाना चाहिए । मैं देश की आजादी के लिए मर-मिटने को तैयार हूँ, छत से कूदना पड़े तो कूद जाऊँगा ।''

दूसरे कार्यकर्ताओं ने पानी चढ़ाया : ''तुम छत से कूदो, देखें देश के लिए तुममें कुर्बानी देने की कितनी शक्ति है ?''

वह बेचारा छत से कूदा तो पैर की हड्डी टूट गयी । ६ महीने तक बिस्तर पर पड़ा रहा । चन्द्रशेखर आजाद को पता चला तो उन्होंने कहा : ''श्रद्धा होना तो ठीक है, देश के लिए कार्य करने का उत्साह होना ठीक है परंतु आजादी के पहले ही, लड़ने के पहले ही हम विकलांग हो के पड़े रहें यह कैसी श्रद्धा, कैसी देशभक्ति ! देशभक्ति अंधी नहीं समझपूर्वक होनी चाहिए । भावुकता के साथ विचार भी होना चाहिए । छत से कूदे, इससे देश की आजादी में तो कुछ लाभ नहीं हुआ बल्कि हड्डी टूट गयी, ६ महीने तक तुम बिस्तर पर पड़े रहे ।''

मानवीय संवेदनाओं से ओतप्रोत

चन्द्रशेखर आजाद सहानुभूतिवाले व्यक्ति थे । आजादी का जोश तो था, साथ ही मानवीय संवेदनाएँ भी उनमें भरी थीं ।

वे झाँसी में छद्म वेश धारण करके एक जगह पर रहते थे और वाहनचालक का किरदार अदा करते थे ।

एक पड़ोसी शराब पी के पत्नी को मारता-पीटता था । चन्द्रशेखर भले वाहनचालक के रूप में थे पर थे तो आजाद विचारों के । उन्होंने उस व्यक्ति को कहा : ''भई ! तुम अपनी पत्नी को मत पीटा करो, अबला है । लोगों के सामने बेचारी को डंडों से पीटते हो, यह अच्छा नहीं लगता ।''

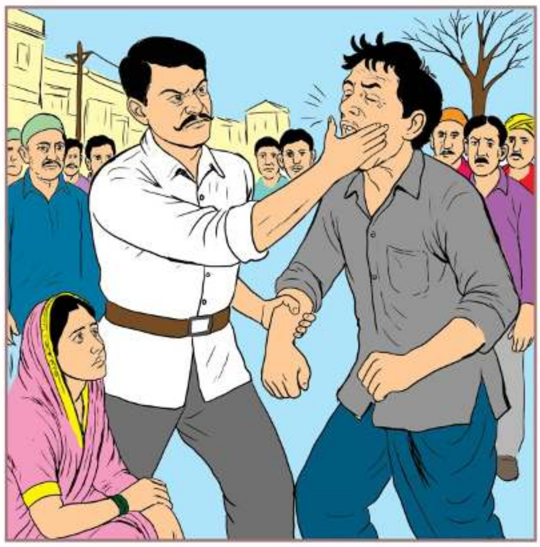

शराबी ने कहा : ''ड्राइवर के बच्चे ! तू अपना काम कर ! मैं उसे पीटूँ, मारूँ चाहे खत्म कर दूँ वह मेरी औरत है, इसमें तेरा क्या जाता है ?''

आजाद : ''खबरदार ! अगर उसको हाथ लगाया तो फिर ठीक नहीं होगा !''

''मेरी औरत है, मैं मारूँ - न मारूँ इसमें तेरा क्या जाता है ?''

''मारेगा तो मैं तेरे को नहीं छोड़ूँगा ।''

''क्या नहीं छोड़ेगा ! मैं अभी उसे चौराहे पर ला के उसकी पिटाई करता हूँ ।''

वह अपनी पत्नी को घर से घसीट के चौराहे पर ले आया और उसे मारने के लिए हाथ उठाया तो चन्द्रशेखर ने उस शराबी का हाथ पकड़ के

आदर्श माता का अनूठा उदाहरण : माता विद्यावती

नृसिंहधरजी और विद्यावती देवी के घर एक दिव्य बालक का जन्म हुआ, जिसका नाम शिवराम रखा गया । दम्पति दया एवं सौजन्य की मूर्ति था । परोपकार उनका स्वभाव था । विद्यावती का घर के दास-दासियों के प्रति पुत्रवत् स्नेह था । विद्यावती शिवभक्त थीं । भगवान शंकर की पूजा किये बिना वे जल तक ग्रहण नहीं करती थीं ।

शिवराम बचपन से तीक्ष्णबुद्धि एवं गम्भीर स्वभाव के थे । माता विद्यावती उन्हें बचपन से अध्यात्म-पथ पर अग्रसर होने के लिए प्रोत्साहित करती थीं ।

किशोर शिवराम ने एक दिन माँ से प्रश्न किया : ''माँ ! भगवान पूजा से प्रसन्न होते हैं या भक्ति से ?''

विद्यावती ने समझाते हुए कहा : ''बेटा ! भक्ति पूजा से उत्पन्न होती है और सेवा से दृढ़ होती है । इससे आध्यात्मिक जीवन का विकास होता है । अगर सरल हृदय से शुद्ध भक्ति की जाय तो भगवान उसे ग्रहण करते हैं । शुद्ध भक्ति के लिए साधना करनी पड़ती है तब ज्ञान प्राप्त होता है और यह ज्ञान सद्गुरु प्रदान करते हैं । सद्गुरु से ज्ञान प्राप्त करने पर ही साधना सफल होती है ।''

शिवराम युवावस्था में पहुँचे तो पिता ने उनके विवाह का आग्रह किया लेकिन नश्वर जीवन को मायिक प्रपंचों में उलझाना शिवराम को प्रिय नहीं था । पिता ने अनेक प्रयत्न किये किंतु वे सफल न हुए । विद्यावती अपने पुत्र की रुचि को पहचानती थीं । वे पुत्र को सदा प्रोत्साहन देकर भगवान के भजन में लगने को कहतीं । उनका वात्सल्य अंधमोह नहीं था, वे पुत्र का सच्चा कल्याण करना चाहती थीं ।

एक दिन नृसिंहधरजी उदास बैठे थे । विद्यावती देवी ने पति के समीप जाकर बड़ी नम्रतापूर्वक कहा : ''आप शिवराम के संबंध में इतने चिंतित क्यों हैं ? वह किसी कुमार्ग में तो लगा नहीं है । हमें प्रसन्न होना चाहिए कि हमारे पुत्र की परमार्थ में रुचि है । हमें तो सब प्रकार से उसे प्रोत्साहन देना चाहिए और ऐसा कोई कार्य नहीं करना चाहिए जिससे उसको बाधा पहुँचे । वह भगवान की भक्ति में लग के अपना उद्धार कर लेगा तो उसके कारण हमारी तथा हमारे पितरों की भी सद्गति हो जायेगी । वह तो अपने कुल का ही नहीं, सम्पूर्ण देश का मुख उज्ज्वल करेगा ।''

पत्नी के विशुद्ध भाव के प्रभाव से नृसिंहधरजी ने शिवराम के विवाह का आग्रह छोड़ दिया ।

आयु के साथ शिवराम की भक्ति-भावना प्रबल होने लगी । नृसिंहधरजी के स्वर्गवास के बाद विद्यावती देवी का अधिकांश समय भगवद्भजन-पूजन तथा पुत्र के साथ भगवान की चर्चा में ही व्यतीत हुआ करता था ।

माता के देहावसान के उपरांत शिवराम पूरी तरह से साधना में रत रहने लगे । फिर उन्हें स्वामी भगीरथजी गुरुरूप में मिले और उन्हें पूर्णता

(शेष भाग पृष्ठ २६ पर)

उन वीर पुरुष की गाथा, जिन्होंने फल नहीं चाहा, केवल कर्तव्य निभाया

(पूज्य बापूजी के सत्संग से)

वीर दुर्गादास जयंती : १३ अगस्त पर विशेष

जसवंत सिंह जोधपुर के नरेश थे । उनके सेनापति वीर दुर्गादास बड़े गजब के वफादार रहे ! जसवंत सिंह की मृत्यु हो गयी, उनका पुत्र अजीत सिंह छोटा था । औरंगजेब ने अपना कूटनीति का दाँव फेंका । दुर्गादास को कहा : ''जसवंत सिंह का पुत्र अभी छोटा है, उसे दिल्ली भेज दो । उसकी पढ़ाई-लिखाई और भरण-पोषण यहाँ करेंगे । और जब योग्य हो जायेगा युवराज तब उसको गद्दी पर बिठायेंगे ।''

दुर्गादास ने देखा कि यह कूटनीति है, वे औरंगजेब के स्वभाव को जानते थे । इन मुगलों ने, इन शहजादों ने, जहाँपनाहों ने कितना-कितना भारतीय संस्कृति वालों का शोषण किया है, उससे वीर दुर्गादास परिचित थे । वे नहीं ले गये अजीत सिंह को । औरंगजेब ने कई दाँव-पेच लड़ाये लेकिन वीर दुर्गादास ने शपथ खा रखी थी कि 'हमने जिनका अन्न खाया है वे भले हमारे सामने सशरीर नहीं हैं किंतु उनकी स्मृति दिलानेवाले उनके वारिस अजीत सिंह तो हैं, वे ही मेरे होनहार स्वामी हैं । मैं अपने प्राणों की बाजी लगाकर भी उनकी रक्षा करता रहूँगा ।'

वे उसको छुपाते रहे, सुरक्षित करते रहे । औरंगजेब ने कई लालच दिये - 'सोने की ८००० मोहर तुमको इनाम में दी जायेंगी, कुँवर को ले आओ ।' दुर्गादास बिके नहीं सोने की मोहरों में । 'तुम्हें ऊँचा पद दे दिया जायेगा, कुँवर को ले आओ ।' पर बिके नहीं । दुर्गादास ताड़न आदि से ऐसा व्यवहार करते थे कि कभी-कभी अजीत सिंह नाराज भी हो जाता था ।

ऐसा करते-करते एक दिन वह समय आया कि वह कुँवर राजपद पर बैठा । जोधपुर का नरेश हुआ अजीत सिंह । औरंगजेब के सारे षड्यंत्र, प्रलोभन और सपने धूल में मिला दिये उन वफादार नौकर वीर दुर्गादास ने ! मैं उनको नौकर नहीं कहूँगा, ऐसे लोग नौकरी करते हुए भी नौकर नहीं हैं, शहंशाह हैं ।

जो स्वार्थ के, वासना के गुलाम नहीं हैं, जिन्हें अपने कर्तव्यपालन का आनंद आता है, जो कर्तव्यनिष्ठ हैं वे नौकर नहीं हैं । भले आजीविका के लिए, शरीर की रक्षा करने के लिए पगार ले लेते हैं पर जिनको कर्तव्यनिष्ठता का सुख मिलता है और कर्तव्यनिष्ठा को जो महत्त्व देते हैं वे नौकर नहीं हैं ।

ऐसे वीर दुर्गादास ने अपना स्वप्न साकार होते देखा । जोधपुर नरेश जसवंत सिंह चले गये किंतु जसवंत सिंह की संतान आज उनका उत्तराधिकारी बनने के योग्य हो गयी । अजीत सिंह इतना अच्छा राजा साबित हो रहा था कि जोधपुर के लोग खुशहाल थे । मुगलों की कूटनीतियों से और शोषण से प्रजा को बचाये जा रहा था । जोधपुर तरक्की किये जा रहा था ।

एक दिन राजदरबार में अजीत सिंह बैठा

फिल्म के गाने से हटाना पड़ा भगवान वेंकटेश्वर के भजनवाला भाग

ताजा खबर

मनोरंजन के नाम पर हिन्दुओं की धार्मिक भावनाओं को आहत करनेवाला एक मामला सुर्खियों में बना हुआ है। भगवान विष्णु के अवतार भगवान वेंकटेश्वर के भजन 'श्रीनिवासा गोविंदा...' को 'डी.डी. नेक्स्ट लेवल' नामक फिल्म के गाने में शामिल करने की अपमानपूर्ण चेष्टा की गयी। स्थानीय लोगों, भक्तों व हिन्दुत्ववादी संगठनों ने इसका पुरजोर विरोध करते हुए फिल्म के निर्माताओं के खिलाफ शिकायत दर्ज करायी।

'तिरुमला तिरुपति देवस्थानम्' ट्रस्ट की ओर से श्री भानुप्रकाश रेड्डी ने कहा : ''सनातन धर्म मनोरंजन के क्षेत्र में एक आसान निशाना बन गया है। क्या कलाकार ऐसे विडियोज या अन्य सामग्री बनायेंगे जिनसे अन्य धर्मों की भावनाओं को ठेस पहुँचती हो ? क्या वे किसी फिल्मी गीत में इस्लाम या ईसाई धर्म से संबंधित धार्मिक गीतों को जोड़ेंगे ? हमने फिल्म निर्माताओं को कानूनी नोटिस भेजा है और उनसे माफी की माँग की है। सेंसर बोर्ड को भी इस नोटिस की एक प्रति भेजी गयी है। उन्हें भी सर्टिफिकेशन के समय अधिक सावधानी बरतनी चाहिए थी। यह उनसे कैसे छूट गया यह भी एक बड़ा प्रश्न है !''

हिन्दू समाज की सक्रियता व कानूनी नोटिस के चलते निर्माताओं को फिल्म के गाने से आपत्तिजनक भाग हटाना पड़ा और मुख्य अभिनेता को माफी माँगनी पड़ी।

गत वर्ष आई.आई.टी. बॉम्बे के ८ छात्रों ने कथित रूप से रामायण से प्रेरित 'राहोवन' नामक नाटक की प्रस्तुति की थी। इसमें भगवान श्रीरामजी को एक शैतान के रूप में दिखाया गया था तथा यह भी दिखाया गया था कि वे माता सीताजी के प्रति हिंसक व्यवहार करते थे। अश्लीलता-युक्त भद्दे संवादोंवाले इस नाटक द्वारा रामजी, सीताजी, लक्ष्मणजी एवं रामायण का तिरस्कार किया गया।

कुछ विद्यार्थियों ने संस्थान के प्रशासन से ऐसे नाटक के प्रस्तुतीकरण के खिलाफ शिकायत की। इसके फलस्वरूप ४ छात्रों पर १-१ लाख से अधिक का जुर्माना लगाया गया व ४ छात्रों पर ४०-४० हजार का जुर्माना लगाया तथा उन्हें छात्रावास से भी निलम्बित किया गया।

हमारे गौरवशाली धर्म की छवि को धूमिल करने के प्रयासों को निश्चित रूप से रोका जाना चाहिए परंतु इसके साथ इस मूल प्रश्न पर भी विचार किया जाना चाहिए कि 'आखिर ऐसी प्रवृत्तियाँ बार-बार केवल हिन्दू धर्म के प्रति ही क्यों होती दिखाई देती हैं ?' दुर्भाग्यवश इसका मूल कारण स्वयं हिन्दू समाज में व्याप्त वह अति सहिष्णुता या कायरता है जो धीरे-धीरे अपने ही धर्म के प्रति उपेक्षा में बदलती गयी। इसी उदासीनता का फायदा उठाकर अवसरवादी स्वार्थी तत्त्व हिन्दू धर्म की जड़ों को काटने के लिए स्वार्थी और कृतघ्न हिन्दुओं को ही मोहरा बनाने लगे और अपना उल्लू सीधा करने लगे।

पूज्य बापूजी विधर्मियों का मोहरा बने हिन्दुओं के प्रति सजग रहकर राष्ट्रवासियों की

नोटबुक रजिस्टर

कम मूल्य, उच्च गुणवत्ता व आकर्षक डिजाइन के साथ सुसंस्कारों का सिंचन

सुसंस्कार व सही दिशा

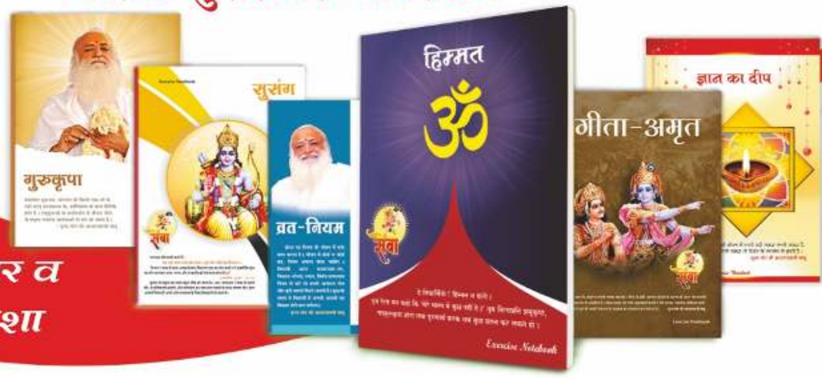

क्या है इनमें खास ?

✲ संयम, सदाचार, श्रद्धा, भक्ति, उद्यम, कर्तव्यपालन आदि सद्गुणों से जीवन को ओतप्रोत करनेवाले पूज्य बापूजी के सत्संग-वचनामृत ✲ हर पृष्ठ पर प्रेरणादायी सुवाक्य, जो विद्यार्थियों को आत्मविश्वास, माता-पिता व गुरुजनों के प्रति आदरभाव आदि सुसंस्कारों से भर दें ✲ मनोबल, बुद्धिबल व स्वास्थ्यबल बढ़ाने के सचोट उपाय ✲ एकाग्रता व स्मरणशक्ति बढ़ाने की कुंजियाँ ✲ परीक्षा में सफल होने के उपाय ✲ प्रसन्नता, उत्साह, आनंद व जीवनीशक्ति वर्धक प्राकृतिक दृश्य, तस्वीरें तथा सांस्कृतिक प्रतीक

नोटबुक	पृष्ठ सं.	सुपर डीलक्स	सिंदूर सीरीज	रजिस्टर	पृष्ठ सं.	सुपर डीलक्स	सिंदूर सीरीज
लाँग नोटबुक	९६	₹ २०	₹ १५	A4 लाँग रजिस्टर	९६	₹ ३०	₹ २५
लाँग नोटबुक	१२८	₹ २५	₹ २०	A4 लाँग रजिस्टर	१६०	₹ ४८	₹ ३५
लाँग नोटबुक	१७६*	₹ ३७.५	₹ २५	A4 लाँग रजिस्टर	१९६	₹ ६५	₹ ४५
लाँग नोटबुक	२४८	₹ ५०	—	A4 लाँग रजिस्टर	२९२	₹ ९०	₹ ६५

✲ 'लाँग नोटबुक १७६ पेज' **2 Line, 4 Line, Square, 3 in 1** व **practical** में भी उपलब्ध है ।

प्राप्ति हेतु सम्पर्क : (०७९) ६१२१०८३२/८८ अथवा स्कैन करें : ➡

हृदय सुधा सिरप

रक्तवाहिनियों को खोलने में विशेष लाभदायी

यह हृदय की तरफ जानेवाली तमाम रक्तवाहिनियों को खोलने में मदद करता है । यदि आप हृदयरोग से पीड़ित हैं और डॉक्टर ने बायपास सर्जरी करवाने के लिए कहा है तो उससे पहले इस सिरप का प्रयोग अवश्य करें ।

हृदयामृत टेबलेट

हृदयसंबंधी समस्याओं में

यह हृदयसंबंधी समस्याओं, जैसे - हार्ट ब्लॉकेज, हृदय की कमजोरी व धड़कन का अनियमित होना, हृदय का दर्द या गति रुक जाना आदि में लाभदायी है ।

पंचरस

भूखवर्धक, रोगप्रतिकारक शक्ति वर्धक, रक्तशुद्धिकर

मधुमेह, हृदय की रक्तवाहिनियों के अवरोध, उच्च रक्तचाप, रक्त में वसा (fat) का बढ़ना आदि रोगों में लाभप्रद । पाचनशक्तिवर्धक, कृमिनाशक एवं रक्तशुद्धिकर अनुभूत रामबाण योग ।

उपरोक्त सामग्री संत श्री आशारामजी आश्रमों में सत्साहित्य सेवा केन्द्रों से तथा समितियों से प्राप्त हो सकती है । अन्य उत्पादों व उनके लाभ आदि की विस्तृत जानकारी के लिए एवं घर बैठे रजिस्टर्ड पोस्ट द्वारा सामग्री-प्राप्ति हेतु गूगल प्ले स्टोर से डाउनलोड करें : "Ashram eStore" App या विजिट करें : www.ashramestore.com या सम्पर्क करें : ९४२८८५७८२०. ई-मेल : contact@ashramestore.com

RNI No. 48873/91
RNP. No. GAMC 1132/2024-26
(Issued by SSPOs Ahd, valid upto 31-12-2026)
Licence to Post without Pre-payment.
WPP No. 08/24-26
(Issued by CPMG UK. valid upto 31-12-2026)
Posting at Dehradun G.P.O. between
1st to 17th of every month.
Date of Publication: 1st July 2025

अहमदाबाद आश्रम में सुसम्पन्न हुआ युवा मौन अनुष्ठान व राष्ट्रीय तेजस्वी युवा शिविर

संकीर्तन पर झूमते शिविरार्थी

युवा नगरी प्रदर्शनी

ऋषि प्रसाद सेवा का संकल्प

योगासन

पुरस्कार वितरण

जन-जन तक ऋषि प्रसाद पहुँचाकर ज्ञान, भक्ति व संस्कृति का दीप जलाते कर्मयोगी

सूरत
तीन पीढ़ियाँ (बेटा, माँ व नानी) ऋषि प्रसाद की सेवा में

कटनी (म.प्र.)

लखीमपुर खीरी (उ.प्र.)

योगाचार्य श्री रामदेव बाबा ऋषि प्रसाद प्राप्त करते हुए

सुसंस्कार-शिक्षा की पाठशाला : विद्यार्थी उज्ज्वल भविष्य निर्माण शिविर

टप्पल, जि. अलीगढ़ (उ.प्र.)

खोरधा (ओड़िशा)

चंडीगढ़

भंडारीगुड़ा, जि. नबरंगपुर (ओड़िशा)

आलंदी, जि. पुणे (महा.)

जयपुर, जि. कोरापुट (ओड़िशा)

नंदिनीनगर, जि. दुर्ग (छ.ग.)

धौली-भुवनेश्वर

राजनांदगाँव (छ.ग.)

उझानी, जि. बदायूँ (उ.प्र.)

मरोली, जि. नवसारी (गुज.)

लींबडी, जि. सुरेन्द्रनगर (गुज.)

पुस्तक मेलों के माध्यम से पहुँच रहा है ऋषियों का वैदिक ज्ञान

देवघर (झारखंड)

मुंबई

कटक (ओड़िशा)

मंड्या (कर्नाटक)

स्थानाभाव के कारण सभी तस्वीरें नहीं दे पा रहे हैं। अन्य अनेक तस्वीरों हेतु वेबसाइट www.ashram.org/seva देखें। आश्रम, समितियाँ एवं साधक-परिवार अपने सेवाकार्यों की तस्वीरें sewa@ashram.org पर ई-मेल करें।

आश्रम के मासिक प्रकाशन की सदस्यता हेतु स्कैन करें : ऋषि प्रसाद ऋषि दर्शन लोक कल्याण सेतु

स्वामी : संत श्री आशारामजी आश्रम **प्रकाशक** : धर्मेश जगराम सिंह चौहान **मुद्रक** : विवेक सिंह चौहान **प्रकाशन-स्थल** : संत श्री आशारामजी आश्रम, मोटेरा, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुजरात) **मुद्रण-स्थल** : हरि ॐ मैन्युफेक्चरर्स, कुंजा मतरालियों, पौंटा साहिब, सिरमौर (हि.प्र.)-१७३०२५ **सम्पादक** : श्रीनिवास र. कुलकर्णी